जीवन का उद्देश्य

मौलाना वहीदुद्दीन खाँ

मनुष्य का भाग्य
(Human Destiny)

एक मनुष्य जिसने पृथ्वी को न देखा हो, वह यदि किसी तीव्रगति के अंतरिक्षयान द्वारा पूरे ब्रह्मांड की यात्रा करे और पहली बार इस पृथ्वी पर उतरे तो वह इस विचित्र ग्रह को देखकर अचंभित रह जाएगा, क्योंकि अत्यधिक फैले हुए ब्रह्मांड में पृथ्वी अपने प्रकार का एकमात्र ग्रह है। विशाल ब्रह्मांड में या तो सितारे हैं, जहां भड़कती हुई आग के अतिरिक्त कुछ नहीं, या फिर यहां ग्रह (Planets) हैं जो सूखी चट्टानों के समान अंतरिक्ष में लगातार घूम रहे हैं। केवल पृथ्वी एकमात्र ऐसा ग्रह है जहाँ मानव जीवन के अनुकूल समस्त साधन उपलब्ध हैं, जिनके संग्रह को जीवन संरक्षक प्रणाली (life support system) कहा जाता है।

प्रत्येक मनुष्य इसी ग्रह पृथ्वी पर जन्म लेता है और अपना समस्त जीवन इसी पर व्यतीत करता है, परन्तु वह पृथ्वी के इस अनोखेपन का बोध नहीं कर पाता। इसका कारण यह है कि बचपन से वह पृथ्वी को देखता है। इस प्रकार दिन–प्रतिदिन देखने से

वह इससे अभ्यस्त हो जाता है। इसी कारण पृथ्वी का यह अनोखापन उसकी नज़रों से ओझल रह जाता है। यदि ऐसा न हो तो वह प्रतिदिन प्रातः जब पृथ्वी को देखे तो पुकार उठे कि पृथ्वी कितनी सुन्दर और संसार कितना परिपूर्ण है :

Oh! What a beautiful Earth,
What a perfect World!

पृथ्वी को यह जीवन प्रदान करने वाली जीवन संरक्षक प्रणाली, मनुष्य जीवन के प्रारम्भ से थी, परन्तु वर्तमान युग में वैज्ञानिक अनुसंधानों ने उसकी इस विशिष्टता को एक ज्ञात घटना बना दिया है। पृथ्वी की जीवन संरक्षक प्रणाली की इस अनूठी व्यवस्था को आज का मनुष्य जितना अधिक जानता है, इससे पहले के मनुष्य को इतना ज्ञान कभी नहीं था।

जीवन संरक्षक प्रणाली क्या है? वह एक वरदान (gift) है जो किसी देने वाले (giver) के द्वारा मनुष्य को प्राप्त हुआ है। इस स्थिति में यह आवश्यक है कि मनुष्य उस वरदान देने वाले का आभार प्रकट करे। उसके सामने अपनी पूरी हस्ती के साथ झुक जाए। मनुष्य को यह जानने की चेष्टा करनी चाहिए कि

देने वाले ने ऐसा अनोखा वरदान उसको क्यों दिया है? इस प्रश्न का उत्तर जानने के बाद ही मनुष्य उस देने वाले की इच्छा के अनुसार इस वरदान का उपयोग कर सकता है।

परन्तु ऐसा न हो सका। इंसान इस पृथ्वी पर जीवन व्यतीत करता है। वह यहां अपने लिए एक सभ्यता का निर्माण कर लेता है। वह अपने और अपने बच्चों के लिए शानदार भविष्य का निर्माण करने की चेष्टा करता है, परन्तु उसे कभी यह विचार नहीं आता कि वह इस तथ्य को जानने का प्रयास करे कि जीवन संरक्षक प्रणाली (life support system) की यह असाधारण व्यवस्था किसने की है और वह इसके बदले में मनुष्य से क्या चाहता है।

गम्भीर चिंतन से यह पता चलता है कि हर विषय की तरह, इस विषय के भी दो पहलू हैं– उचित और अनुचित। उदाहरण के लिए लौह तत्व का एक उचित पहलू यह है कि उसके द्वारा लाभदायक मशीनें बनाई जाएं, परंतु उसका दूसरा अनुचित पहलू यह है कि उसके द्वारा तबाह करने वाले हथियार बनाए जाऐं। मशीन बनाना लोह तत्व का उचित उपयोग

है, और उसके द्वारा हथियार बनाना उसका अनुचित उपयोग है।

यही मामला जीवन–संरक्षक–प्रणाली (life support system) का है। इस विशाल प्रणाली को सही दिशा से देखने वाला मनुष्य, जीवन व्यतीत करने के लिए उचित एवं आवश्यक व्यवहार को जान लेता है, परन्तु जो व्यक्ति, रचयिता की इस प्रणाली को सही दिशा से नहीं देख पाता, ऐसे मनुष्य का व्यवहार भी ग़लत एवं अनुचित हो जाता है।

जीवन–संरक्षक–प्रणाली (life support system) के अनुकूल, आचरण को सुनिश्चित करने का एक ही माध्यम है। हम यह जानें कि ईश्वर ने अपनी रचनाओं के बारे में कौन सी कार्य प्रणाली नियोजित की है। इसी कार्यप्रणाली द्वारा हम यह समझ सकते हैं कि जीवन–संरक्षक–प्रणाली (life support system) के विष्य में हमारा कौन सा आचरण उचित है और कौनसा अनुचित।

पैग़म्बर (Prophet) के द्वारा ईश्वर ने जीवन के बारे में अपनी जो सृष्टि योजना बताई है, वह यह है कि ईश्वर ने इन्सान को एक शाश्वत रचना के रूप में

पैदा किया है। किन्तु मनुष्य की आयु का एक संक्षिप्त भाग मृत्यु–पूर्व जीवन काल (pre-death period) में रखा गया है, और उसकी आयु के विस्तृत भाग को मृत्यु के बाद वाले जीवन काल (post-death period) में रख दिया गया है। मृत्यु से पूर्व, जीवन–काल परीक्षा–समय है, और मृत्यु के बाद वाला जीवन–काल परीक्षा के अनुसार परिणाम पाने का समय है।

जब मानव जाति का अन्त होगा, उस समय अत्यधिक विशाल स्तर पर फैसले के दिन (Day of Judgement) का गठन होगा। उस समय इन्सानों का रचयिता उपस्थित होकर समस्त प्राणियों को उनके जीवन के रिकार्ड के अनुसार पुरस्कृत या दण्डित करेगा। पुरस्कार पाने वालों के लिए शाश्वत स्वर्ग (जन्नत) है और दण्डित लोगों के लिए अनन्त काल तक नर्क (जहन्नम)।

ईश्वर की इस रचना योजना के सन्दर्भ में देखा जाए तो यह समझा जा सकता है कि जीवन को सफलता से व्यतीत करने हेतु, मनुष्य का रवैया क्या होना चाहिए। इस विषय पर सही दिशा में सोचने के लिए आवश्यक है कि जीवन को उसके रचनाकार

की दृष्टि से देखा जाए, और उसके बारे में ग़लत रवैया यह है कि उसको व्यक्ति–विशेष की दृष्टि से देखा जाए। यही दृष्टिकोण इस संसार में मनुष्य के व्यवहार को उचित या अनुचित सुनिश्चित करता है।

इस व्याख्या को सामने रखकर देखा जाए तो जीवन के प्रति दो विपरीत मत बनते हैं। यदि रचनाकार की योजना के अनुकूल बनी विचार धारा, परीक्षा सहायक प्रक्रिया (test support system) है तो इसके विपरीत, विचारधारा जो व्यक्ति–विशेष की समझ को लेकर बनेगी, वह मात्र आनन्द सहायक प्रक्रिया (enjoy support system) होगी। पहली स्थिति में जीवन एक जवाबदेही का मामला बनता है, जबकि दूसरी स्थति में जीवन का लक्ष्य घट कर पशु के स्तर पर आ जाता है– खाओ, पियो, आनन्द उठाओ और इसी अवस्था में मर जाओ।

वर्तमान युग में अनुसंधानात्मक अध्ययन के माध्यम से मनुष्य को जीवन और जीवन–रक्षक–प्रणाली (life support system) के बारे में अनेकों महत्वपूर्ण पहलू ज्ञात हुए हैं। इसका परिणाम यह होना चाहिए था कि मनुष्य जीवन के उद्देश्य के बारे में अधिक गम्भीरता

से विचार करे, वह इन वरदानों का उपयोग करते समय उस देने वाले का हमेशा से अधिक आभार प्रकट करने वाला बन जाए, परन्तु ऐसा नहीं हुआ। मनुष्य इस वास्तविक्ता को भूल गया कि जीवन–. रक्षक– प्रणाली (life support system) वास्तव में परीक्षा सहायक व्यवस्था (test support system) है। इसके विपरीत, मनुष्य ने जीवन–रक्षक–प्रणाली को आनन्द सहायक व्यवस्था (enjoy support system) समझ लिया और जीवन का लक्ष्य प्रायः यह रह गया कि अधिक से अधिक भौतिक विकास करो, ताकि जीवन को अधिक से अधिक सुख सम्पन्न बनाया जा सके।

यहां मुझे अपना एक अनुभव याद आता है जो कि वर्तमान स्थिति का बहुत उचित उदाहरण है। लगभग 1972 में, मैं राजस्थान में एक स्थान पर गया। इस यात्रा में मेरे साथ और कुछ लोग थे। यहां एक निर्जन पर्वत था जिसके ऊपर जाने के लिए एक सड़क बनी हुई थी। हम लोग जीप द्वारा उस पर्वत पर चढ़े। जब हम लोग पर्वत पर पहुंचे तो यहां पर एक अविश्वासनीय दृष्य देखा। इस वीरान जगह पर एक बड़ा भवन बना हुआ था, कदाचित किसी राजा

ने बनवाया होगा। यह भवन अभी तक ठीक हालत में था। परन्तु वहाँ हमने किसी मनुष्य को नहीं देखा, बल्कि मनुष्य के स्थान पर उस भवन के बाहर और उसके अंदर हज़ारों की संख्या में बंदर मौजूद थे। इन बंदरों ने वहां उत्पात मचा रखा था। इस स्थिति के कारण हम लोग इस भवन के अंदर न जासके, मात्र बाहर से देखकर लौट आए। बंदरों की एक विशेषता यह होती है कि वह एक अनाधिकृत स्थान पर क़ब्ज़ा कर के वहां निरर्थक उछलकूद करने लगते हैं।

मैं वहाँ खड़ा देर तक उस दृष्य को देखता रहा। मैंने सोचा कि यह क़ाबिज़ बंदर इस बात से अज्ञात हैं कि इस भवन को किसने बनाया है, और किस कार्य के लिए बनाया है। यह बंदर जो यहाँ पर अर्थहीन उछलकूद मचा रहें हैं तथा अनेक प्रकार की आवाज़ें निकाल रहें हैं, उनका ये आचरण बनाने वाले की इच्छा के अनुकूल है या नहीं। इन प्रश्नों से पूरी तरह अज्ञात रह कर वह वहां ऐसा कार्य कर रहे हैं जो इस भवन के अपराधिक उपयोग के समान है।

फिर मैंने सोचा कि क्या इस भवन का यह

अपराधिक उपयोग हमेशा इसी प्रकार चलता रहेगा या भवन का निर्माणकर्ता कभी प्रकट होकर इन बंदरों को इनके अपराध के लिए दण्डित करेगा और फिर वह इस सुंदर भवन को उन लोगों को सौंप देगा जिनके लिए इसका निर्माण कराया गया था। इस भवन का न्यायसंगत प्रयोग तो यही था कि जिस उद्देश्य हेतु इसकी रचना की गई थी, उसी उद्देश्य के लिए इसका प्रयोग किया जाए। परन्तु इसके विपरीत हुआ यह कि उसपर जंगली बंदरों ने अपना अधिकार जमा लिया और वहां वह अपनी अर्थहीन उछलकूद में व्यस्त हो गए।

यह उदाहरण आज व्यापक रूप से संपूर्ण मानव जाति पर सही सिद्ध हो रहा है। वर्तमान पृथ्वी आज उसी भवन के समान हो गई है और पूरे संसार की स्थिति यह है कि औरत और मर्द बहुत बड़े पैमाने पर ग़ैर–ज़िम्मेदाराना ढंग से पृथ्वी के ऊपर फैल गए हैं। वह संसार को केवल इस निगाह से देखते हैं कि यहां पर वह अपनी इच्छाएं किस प्रकार पूरी करें। वह इस वास्तविकता के बारे में कदापि विचार नहीं

करते कि इस पृथ्वी का निर्माण किसने किया है और इसका उद्देश्य क्या है?

ऐसा क्यों हुआ? वर्तमान युग में जिस समय विज्ञान ने जीवन–संरक्षक–प्रणाली (life support system) के बारे में व्यापक स्तर पर जानकारी प्राप्त की, ठीक इसी समय एक और घटना घटी, वह घटना यह थी कि विभिन्न कारणों द्वारा विश्वयापी स्तर पर एक नई सभ्यता (culture) का आरम्भ हुआ जिसको आनन्दपूर्ण सभ्यता (enjoyment culture) कहा जाता है। इस आनन्दपूर्ण सभ्यता (enjoyment culture) के माहौल में सभी लोगों ने संव्यमेव समझ लिया कि यहाँ जो कुछ है, वह सब इसलिए है ताकि मनुष्य उससे आनन्द भोग सके। ऐसा किसी तर्क के कारण नहीं बल्कि वर्तमान माहौल के प्रभाव से हुआ। व्यावहारिक तौर पर आनन्द सहायक प्रकिृया (enjoyment support system) ने जीवन–रक्षक– प्रणाली (life support system) का स्थान ले लिया। और फिर यह हुआ कि मानव–समाज प्रायः पशु–समाज बनकर रह गया।

पशु और मनुष्य के बीच के अंतर पर चिंतन करते हुए यह स्पष्ट हो जाता है कि पशु केवल अपने निजी

हित को जानता है। मनुष्य अपने निजी हित के अतिरिक्त अपने कर्तव्यों से भी प्रचित होता है, और उससे जुड़ी हुई अपेक्षाओं को पूरा करता है। परन्तु वर्तमान संसार में ऐसा प्रतीत होता है कि मानो यह फर्क़ मिट गया हो। आज के मनुष्य और पशु के बीच केवल वाहय (external) अंतर ही बाक़ी रह गया है।

यह कोई साधारण बात नहीं है। निश्चित रुप से यह अप्राकृतिक है, और प्रकृति के मार्ग से हटना सदैव दोहरी हानि का कारण बनता है, अर्थात मृत्यु के पूर्व जीवन काल में भी असफल रह जाना, और मृत्यु के बाद वाले जीवन काल में भी असफलता प्राप्त करना। मनुष्य इस संसार में अपनी स्वतंत्रता का दुरुपयोग करते हुए प्रकृति के मार्ग से हट तो सकता है, परन्तु उसमें यह क्षमता नहीं कि इस अवहेलना के गंभीर परिणाम से वह स्वंय को बचा सके। यही वह सबसे विकट संकट है जो आज के मनुष्य पर मंडला रहा है।

प्रत्येक व्यक्ति अपने सुंदर लक्ष्य तक पहुचने की कामना करता है। वह अपना पूरा समय और समस्त शक्ति इस गंतव्य को पाने में गवां देता है। परन्तु हम देखते हैं कि अंततः प्रत्येक व्यक्ति के हाथ केवल

निराशा लगती है। इस संसार में कोई व्यक्ति चाहे वह निर्धन हो या धनवान, स्त्री हो या पुरूष, जब वह मरता है तो उसकी मृत्यु निराशमय ही होती है, इसमें किसी भी औरत या मर्द का अपवाद नहीं।

इसका कारण यह है कि व्यक्ति अपनी जिस मंज़िल को पाना चाहता है, उसके साधन इस संसार में उपलब्ध ही नहीं हैं। इसी कारणवश अंथक प्रयत्नों के उपरांत भी कोई व्यक्ति अपने मनचाहे गंतव्य तक नहीं पहुंच पाता, अर्थात वह अपने लक्ष्य को पाने में असफल रह जाता है।

मनुष्य के शरीर में पाँच विशेष योग्यताएँ होती हैं। इन योग्यताओं को पांच इंद्रियां कहा जाता है, यह हैं– देखना, छूना, चखना, सूंघना और सुनना– sight, touch, tase, smell and hearing.

यह पांच प्रकार की इंद्रियाँ वास्तव में पाँच मक़ामाते लज़्ज़त हैं। इनमें मनुष्य के लिये असीम आनन्द की अनुभूति रखी गई है। छूना, चखना, सूंघना और सुनना, मनुष्य को आनंद का अनुभव देते हैं। इस पूरे विश्व में किसी भी अन्य प्राणी या जीव जन्तु में आनन्द का अनुभव करने की क्षमता नहीं है। केवल मनुष्य ही एक

ऐसा प्राणी है, जिसमें यह अनुपम योग्यता पाई जाती है कि वह किसी भी वस्तु से विशेष प्रकार का सौम्य और सुखद अनुभूति प्राप्त कर सकता है।

इसी के साथ मनुष्य में छटी हिस (sixth sense) भी विद्यमान है। यह छटी हिस उसके सोचने और समझने की क्षमता को और श्रेष्ठ बनाती है। सोचना (thinking) मनुष्य का सर्वोच्च गुण है। सोचने का कार्य यद्यपि प्रत्यक्ष रूप से दिखाई नही देता, परन्तु यह मनुष्य को निस्सीमित आनन्द देता है।

प्रत्येक व्यक्ति अत्यधिक इच्छाओं के साथ जन्म लेता है और फिर थोड़े समय में प्रत्येक स्त्री एवं पुरुष की मृत्यु इस प्रकार हो जाती है जबकि उनकी इच्छाऐं अभी पूरी नहीं हुई होतीं।

इसका अर्थ यह हुआ कि इस संसार में मनुष्य के पास इच्छाएं तो हैं, परन्तु इन इच्छाओं की पूर्ति का कोई साधन यहां मौजूद नहीं। यह इस वास्तविक्ता की तरफ एक निर्णायक संकेत है कि सृष्टिकर्ता (Creator) की उत्पत्ति येाजना के अनुसार इन इच्छाओं की पूर्ति का साधन मृत्यु के पूर्व जीवन काल में नहीं रखा गया है, बल्कि वह मृत्यु के बाद वाले जीवन काल में

रखा गया है। यह इच्छाएं मनुष्य को इसलिए दी गई हैं कि वह जीवन के यथार्थ को समझे, और उसके अनुसार अपने जीवन को व्यवस्थित करे।

यही नहीं, मनुष्य ही एकमात्र ऐसा प्राणी है जो कल (tomorrow) की कल्पना कर सकता है। जबकि दूसरे प्राणी जीवित होते हुए भी केवल वर्तमान को जानते हैं। अपनी सीमित मनोदशा के कारण उनको भविश्य का कोई ज्ञान नहीं। नहीं जान पाते। इसके विपरीत, मनुष्य में कल या भविष्य की कल्पना अत्यधिक शक्तिशाली अवस्था में विद्यमान रहती है। परन्तु मनुष्य का व्यवहारिक अनुभव यह बताता है कि मनुष्य का यह वांछित भविष्य इस वर्तमान संसार में उसकी पहुँच से बाहर है।

इस वास्तविक्ता में एक संकेत (clue) छुपा हुआ है। यह संकेत मनुष्य को बताता है कि वह जिस भविष्य को पाना चाहता है, सीमाबद्धता के कारण वर्तमान संसार में उसको पाना सम्भव नहीं है। इस मनचाही मंज़िल को पाने के लिए उसको वर्तमान संसार में आवश्यक तैयारी करनी है, ताकि मृत्यु के उपरांत वह अपने इस वांछित भविष्य को पा सके।

वर्तमान संसार की अवस्था एक परीक्षा कक्ष जैसी है। परीक्षा कक्ष में छात्रों को ज़रूरी साधन थोड़े समय के लिए उपलब्ध कराया जाता है। उसकी समस्त इच्छाओं की पूर्ति का वहां कोई साधन नहीं होता, इसलिए यदि कोई छात्र परीक्षा कक्ष को केवल परीक्षा कक्ष समझे, तो उसे नैराश्य का सामना नहीं करना पड़ेगा। परन्तु जो छात्र परीक्षा कक्ष को अपनी इच्छाओं की पूर्ति का स्थान समझ ले, उसको वहाँ निराशा के अतिरिक्त कुछ और नहीं मिलेगा।

ईश्वर की सृष्टि निर्माण योजना (creation plan of God) के अनुसार, वर्तमान संसार परीक्षा (test) के लिए बनाया गया है। यहाँ जो जीवन–संरक्षक–प्रणाली है, वह मात्र उतनी ही है जितनी परीक्षा के लिए आवश्यक है। अब जो लोग इस वर्तमान संसार को परीक्षा–स्थल समझें और अपने जीवन को उसी के अनुसार व्यवस्थित करें, वह निराशा से बच जाएंगे। परन्तु जो लोग वर्तमान संसार को अपनी इच्छाओं की पूर्ति का स्थान समझ लें, उनको कड़ी निराशा का सामना करना होगा।

पृथ्वी पर उचित जीवन शैली की सफल विधि

यही है कि मनुष्य, ईश्वर की सृष्टि निर्माण योजना के अनुसार, इस संसार को आनन्द भोगने का स्थान न समझे, बल्कि वह इसको परिक्षा स्थल समझे। ऐसा मनुष्य ईश्वर की सृष्टि निर्माण योजना के अनुसार अपना जीवन व्यतीत करेगा और परिणामतः वह शाश्वत सफलता प्राप्त करेगा।

परीक्षा के इस भाव को ध्यान में रखते हुए एक व्यक्ति की जीवन शैली आनन्ददायक प्रवृत्ति के विपरीत ढलती है। दोनों की स्थिति एक दूसरे से पूर्णतया भिन्न होती है। यहाँ हम दोनों ही प्रकार के उदाहरण का उल्लेख करेंगे, जिससे दोनों का अन्तर स्पष्ट हो जाएगा।

परीक्षा (test) का स्वभाव रखने वाले मनुष्य के अन्दर ख़ुदा अभिमुख सोच (God-oriented thinking) पैदा होती है। वह प्रत्येक मामले में यह जानने की चेष्टा करता है कि ख़ुदा की इच्छा के अनुसार उसको क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिये। इसके विपरीत, आनन्द का स्वभाव रखने वाले व्यक्ति के अन्दर स्वंय की इच्छा के अनुकूल सोच (self-oriented thinking) उत्पन्न होती है। वह अपने को स्वंय के

आधीन समझने लगता है, ना कि स्वंय के सिवा किसी और श्रेष्ट हस्ती का आधीन।

परीक्षा का स्वभाव रखने वाला व्यक्ति मृत्यु के बाद की दुनिया को बेहतर बनाने की चिन्ता में रहता है। आनन्द का स्वभाव रखने वाला व्यक्ति केवल अपने आज को अच्छे से अच्छा बनाने की चिन्ता करता है। उदाहरण के तौर पर परीक्षा का स्वभाव रखने वाले व्यक्ति को धन–सम्पत्ति की अधिक चाह नहीं होगी, वह इस मामले में आवश्यकता अनुसार लेकर ही संतुष्ट हो जाएगा। इसके विपरीत, आन. न्द का स्वभाव रखने वाला व्यक्ति सदैव अधिक से अधिक धन जुटाने की चिंता में लगा रहेगा। इस मामले में उसकी हिर्स कभी ख़त्म नहीं होगी। परीक्षा का स्वभाव रखने वाले के पास एक छोटी कार हो, और एक व्यक्ति उससे कहे कि तुम बड़ी कार ख़रीद लो, तो वह उत्तर देगा कि मुझ को अपनी जवाबदेही और नहीं बढ़ानी है। उसके विपरीत, आनन्द (enjoyment) का स्वभाव रखने वाला व्यक्ति इसी कोशिश में रहेगा कि उसके पास न सिर्फ़ एक बड़ी कार हो, बल्कि उसके पास कई और कारें हो जाएं।

परीक्षा देने का स्वभाव रखने वाला व्यक्ति व्यर्थ मनोरंजन से स्वंय को दूर रखेगा, कयोंकि वह उसे ध्यान को भंग करने (distraction) का कारण समझेगा। इसके विपरीत आनन्द का स्वाभाव रखने वाला व्यक्ति मनोरंजन की चीज़ों में कूद पड़ेगा,, चाहे उसमें उसका कितना ही धन और समय नष्ट हो जाए। परीक्षा की समझ रखने वाला व्यक्ति अपने आप को हर तरह के अपव्यय से बचाएगा। उदाहरण के तौर पर व्यर्थ खर्च करने से, व्यर्थ पानी बहाने से, व्यर्थ बोलने से इत्यादि, इसके विपरीत, आनन्द का स्वभाव रखने वाला व्यक्ति किसी भी मामले में व्यर्थ खर्चे को कोई अहमियत न देगा। परीक्षा के स्वभाव वाला व्यक्ति अपने आपको शिष्टाचार का पाबन्द समझेगा। इसके विपरीत, आनन्द का स्वभाव रखने वाला आदमी सारा महत्व अपने निजी फायदे को देगा, न कि किसी उच्च–स्तरीय शिष्टाचार को।

ख़ुदा की सृष्टि निर्माण योजना (creation plan of God) के अनुसार, इस मामले में सारा महत्व इस बात का है कि भिन्न–भिन्न परिस्थितियों के बीच व्यक्ति के अन्दर किस प्रकार के व्यक्तित्व (personality) का

निर्माण हो रहा है — ईश्वरीय व्यक्तित्व, या ईश्वर विहीन व्यक्तित्व। वर्तमान संसार में मनुष्य जिस प्रकार अपने भौतिक शरीर के लिए भौतिक भोजन प्राप्त करता है, उसी प्रकार उसको अपने आध्यात्मिक अस्तित्व के लिए निरंतर आध्यात्मिक भोजन की आवश्यक्ता होती है। यही आध्यात्मिक भोजन उसके अन्दर ईश्वरीय व्यक्तित्व (divine personality) का निर्माण करता है।

आध्यात्मिक भोजन क्या है–जब किसी व्यक्ति के सामने सत्य आए तो वह उस सत्य को स्वीकार करे, चाहे वह सत्य उसके अपने आदमी ने प्रस्तुत किया हो, या किसी अन्य व्यक्ति ने। वह परिस्थितियों के आधीन होकर न सोचे, बल्कि परिस्थितियों से उपर उठ सके, वह प्रभावित समझ के आधीन होकर निर्णय न ले। उसका जीवन धन्यवाद, कृतज्ञता और उपकारों को मानने वाला हो, वह नकारात्मक (negative) अनुभव के बावजूद सकारात्मक (positive) रवैया अपनाए और अपनी मिली हुई स्वतंत्रता को स्वंय उस अनुशासित करे। ऐसा व्यक्ति हर स्थिति में न्याय की बात करता है, चाहे वह न्याय स्वंय के विरूद्ध क्यों न हो। वह सांसारिक और भौतिक लाभ के बजाए परलोक की

शाश्वत सफलता का सदैव ध्यान रखता है, उसकी गतिविधियों का लक्ष्य शाश्वत सफलता की उपलब्धि से होता है, न कि इस संसार की अस्थायी सफलता की प्राप्ति से।

जो लोग वर्तमान संसार को अपने लिए परिक्षा स्थल समझें और उसके अनुसार स्वंय के जीवन का निर्माण करें, वह परलोक में खुदा के पड़ोस में जगह पाएंगे। इसके विपरीत, जो लोग संसार को मात्र आनन्द भोगने का स्थान समझें, अंत में उन लोगों को अत्यंत कठोर परिणाम का सामना करना होगा, उनके भाग्य में परलोक की सार्वकालिक दुनिया में हसरत और पश्चाताप के अतिरिक्त और कुछ नहीं होगा।

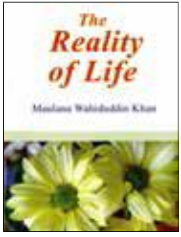

जीवन का उद्देश्य

मैं, 2 मार्च 2006 की सांयकाल को विमान के द्व ारा हैदराबाद से दिल्ली लौट रहा था। मेरे साथ सी. पी.एस. (C.P.S.) के कई और लोग थे। इस विमान में एक महिला नेहा बटवारा (Neha Batwara) भी यात्रा कर रही थीं। हमारी टीम के लोग विमान में बैठे यात्रियों के साथ आध्यात्मिक विषय पर चर्चा कर रहे थे। इसी दौरान उन्होंने नेहा से भी बात की, और उन्हें एक पेमफलेट दिया। यह महिला दिल्ली एयरपोर्ट से उतर कर अपने वतन अलवर चली गईं, किंतु बाद में हैदराबाद से उनका एक पत्र 28 मार्च 2006 को ई–मेल (email) के द्वारा मिला, वह पत्र इस प्रकार थाः

Respected Maulana Wahiduddin Khan,

I am Neha, working in an MNC for some people, it cannot be better than to get a job in top MNC just after graduation. But believe me, I am in search of a more purposeful life. That's why I am writing to you.

I met Khalid Ansari and Sadia Khan on a flight to Delhi and could apparently see the difference your guidance has made to their lives.

Maulana, I know we have been created by God, and we all have a purpose here to fulfill on earth, which, if done, will be more satisfying than getting heaven after death.

The point where I am lacking is to know the purpose for which I have been sent here. I could not come to your class in Delhi, because my family was against going to some spiritual classes.

I will be grateful to you for the whole of my life if you could help me in any way. I am currently in Hyderabad. (Neha Batwara)

यह पत्र सादा तौर पर केवल एक महिला का पत्र नहीं बल्कि वह प्रत्येक आत्मा की पुकार है। यह पत्र एक तरह से प्रत्येक स्त्री अथवा पुरूष के दिल की तर्जुमानी है। प्रत्येक व्यक्ति एक उद्देश्यवान जीवन की खोज में है। यह मनुष्य के स्वभाव में है। परन्तु लोग यह चाहते हैं कि यह उद्देश्यवान जीवन उनको पूर्ण रूप में मृत्यु से पहले के जीवन काल में मिल जाए। मृत्यु के बाद वाले जीवन काल का न उनको ज्ञान है और न वह इसकी प्रतीक्षा करने को तैयार हैं।

इस सिलसिले में एक बुनियादी प्रश्न यह है कि मनुष्य इस उद्देश्यवान जीवन को कहां प्राप्त करना चाहता है, अपने निर्मित संसार में या खुदा द्वारा निर्मित संसार में? निश्चित है कि यह उदेद्श्य उसको मात्र खुदा के बनाए हुए संसार में प्राप्त करना है। क्योंकि स्वंय का निर्मित संसार तो सिरे से मौजूद ही नहीं।

ऐसी अवस्था में यह आवश्यक है कि मनुष्य सबसे पहले ईश्वर के द्वारा निर्मित इस संसार के नियमों को जाने और समझे कि उसके बनाने वाले ने किस उद्देश्य के अनुरुप इसकी रचना की है। इसको समायोजित किऐ बिना मनुष्य किसी भी स्थिति में अपने उद्देश्य को प्राप्त नहीं कर सकता।

यदि आप के पास एक अच्छी कार है और आप उसको सड़क पर दौड़ाना चाहें तो आपको पहले यह जानना होगा कि जिस देश में आप अपनी गाड़ी दौड़ाना चाहते हैं, वहां right hand drive (दाहिने चलो) का नियम है या left hand drive (बाएं चलो) का। यदि आप left hand drive के देश में अपनी गाड़ी right की ओर दौड़ाने लगें, तथा right hand drive के देश में left की ओर अपनी गाड़ी दौड़ाना शुरू

कर दें, दोनों ही परिस्थिति में आप सफल यात्रा से वंचित रह जायेंगे।

यही मामला जीवन की यात्रा का भी है। मनुष्य अपने जीवन की विस्तृत यात्रा किसी रिक्त स्थान या स्वंय के बनाए हुए संसार में नहीं करता। वह अपनी यह यात्रा ईश्वर द्वारा निर्मित संसार में करता है। इसी कारणवश प्रत्येक स्त्री और पुरूष के लिए यह आवश्यक है कि वह ईश्वर की सृष्टि निर्णमान योजना को समझे और उसी के अनुसार अपने जीवन का निर्माण करे। यदि वह ऐसा न कर सके तो वह स्वंय को असफलता से नहीं बचा सकता है।

स्वंय मनुष्य का अपना अनुभव इस विषय को समझने के लिए पर्याप्त है। जब मनुष्य को प्यास का अनुभव होता है तो उसे अपनी प्यास बुझाने के लिए पानी की आवश्यकता होती है। इसी प्रकार, अपनी भूख को शांत करने के लिए मनुष्य को प्रकृति द्वारा उपलब्ध कराऐ गए भोजन की आवश्यक्ता होती है। यही नहीं, प्रत्येक व्यक्ति को सांस लेने के लिए ऑक्सीजन की आवश्यक्ता है, इसके बिना वह जीवित नहीं रह सकता और सांस लेने के लिए मनुष्य उस

व्यवस्था का प्रयोग करता है जो प्रकृति ने उसके लिए स्थापित कर रखी है। मनुष्य की समस्त दूसरी आवश्यकताएं भी इसी प्रकार पूरी होती हैं।

ठीक यही मामला जीवन के उद्देश्य का भी है। मनुष्य को अपने बनाने वाले की योजना को जानना चाहिए, क्योंकि मनुष्य के पास इसके अतिरिक्त कोई दूसरा विकल्प नहीं। कुरआन सृष्टिकर्त्ता की किताब है। कुरआन में इस प्रश्न का उत्तर उसकी सूरह न0 103 में इस प्रकार दिया गया है:

> History is a witness that man is in loss, Except those who follow the course of life set by the Creator.

अर्थात, इतिहास गवाह है कि इन्सान घाटे में है सिवाय उन लोगों के जो ईश्वर के बनाए हुए रास्ते पर चलें।

ईश्वर ने इंसान के जीवन काल को दो भागों में बाँट दिया है – मृत्यु से पूर्व का जीवन काल, एवं मृत्यु के बाद का जीवन काल। मृत्यु से पूर्व, कार्य करने का समय है और मृत्यु के बाद वाला समय किए गए कार्यों का परिणाम पाने का समय। जो मृत्यु के बाद

मिलने वाला है, वह मृत्यु से पूर्व नहीं मिल सकता और जो कुछ मृत्यु से पहले करना है, उसके करने का समय मृत्यु के बाद बाक़ी नहीं रहेगा।

प्रत्येक व्यक्ति अत्यधिक इच्छाओं के साथ जन्म लेता है। यह इच्छाएं हर एक को बहुत प्रिय होती हैं, किंतु कटू वास्तविकता यह है कि समस्त मानव जाति के इतिहास में कोई एक भी व्यक्ति अपनी इन इच्छाओं की पूर्ती नहीं कर सका। मनुष्य अपनी इच्छाओं की पूर्ती के लिए आजीवन परिश्रम कर बज़ाहिर तो बड़ी–बड़ी सफलताएँ प्राप्त कर लेता है, परन्तु फिर भी हर एक अपूर्ण इच्छाओं के साथ मरता है। दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि वर्तमान संसार में वह जिस भरपूर प्रसन्नता को पाना चाहता था, उसे पाने में वह असफल रहा।

वर्तमान दुनिया में प्रत्येक वस्तु का एक जोड़ा है जो उसका अस्तित्व पूर्ण करता है। उदाहरण के लिए, निगेटिव (negetive) पार्टिकल का जोड़ा पाज़िटिव (positive) पार्टिकल, जानवरों में नर अथवा मादा, मनुष्य में स्त्री–पुरूष आदि।

युगल अर्थात जोड़े का नियम जड़, जीव, जन्तुओं

में विश्वव्यापी स्तर पर स्थित है। इस विशाल नियम में सिर्फ एक अपवाद है और वह मनुष्य की इच्छाओं का है। प्रत्येक व्यक्ति इच्छाओं के अतिगहन भाव के साथ जन्म लेता है। परन्तु प्रत्येक मनुष्य अपनी इन इच्छाओं की पूर्ति किए बिना मर जाता है। संसार में इच्छाएँ हैं परन्तु इनका जोड़ा, अर्थात इच्छाओं की पूर्ति यहाँ उपलब्ध नहीं।

प्रत्येक व्यक्ति इस प्रश्न का उत्तर पाना चाहता है, परन्तु इससे पूर्व कि उसे अपने प्रश्नों का संतोष जनक उत्तर मिले, वह हसरत के साथ इस संसार से चला जाता है।

अमेरीकी मिशनरी बिली ग्राहम (Billy Graham) ने उल्लेख किया है कि एक बार उसके पास अमेरीका के एक वृद्ध करोड़पति का अतिआवश्यक संदेश आया। बिली ग्राहम तत्काल अपने सभी कार्यक्रम छोड़ कर उस के घर पहुँचे। वहाँ उन्हें एक कक्ष में ले जाया गया और उनकी भेंट अमेरीकी करोड़पति से कराई गई। अमेरीकी करोड़पति ने बिना किसी भूमिका के कहा– देखो, मैं एक बूढ़ा आदमी हूँ। जीवन मेरे लिए सारी सार्थकता खो चुका है। अज्ञात संसार में

एक निर्णायक छलांग लगाना मेरी नियति बन चुका है। युवक! क्या तुम मुझे आशा की कोई किरण दे सकते होः

> You see, I am an old man. Life has lost all meaning. I am going to take a fateful leap into the unknown. Young man, can you give me a ray of hope.

बिली ग्राहम के पास इस प्रश्न का कोई सन्तोषजनक उत्तर नहीं था। अमेरीकी करोड़पति उत्तर से वंचित अवस्था में ही मर गया।

इस संसार का प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन का उद्देश्य जानना चाहता है। हर एक प्रसन्न एंव तृप्त जीवन की खोज में लगा हुआ है और चाहता है कि उसको ऐसा जीवन मिले जिसमें उसको पूरी तरह सन्तोष (fulfilment) प्राप्त हो सके। परन्तु हर एक का अंत असफलता पर ही होता है। यह समझकर कि दुनिया में भौतिक विकास अतः सम्पन्नता ही सब कुछ है, प्रत्येक व्यक्ति ने भौतिक वस्तुऐं इक्टठ्ठा करके उसके द्वारा पूर्णतः जीवन (फुलफिलमेंट) को प्राप्त करने की चेष्टा की। परन्तु किसी अपवाद के बिना

एक भी व्यक्ति को अपने जीवन में वांछित सन्तोष न प्राप्त हो सका।

ऐसी अवस्था में मूल समस्या पुनः निरीक्षण (re-assessment) की है। अब असल कार्य यह है कि गम्भीरता के साथ इस पर विचार किया जाए कि जब संसार में उपलब्ध भौतिक संसाधनों से पूर्णतया सन्तोष सम्भव नहीं तो फिर वह किन साधनों से हो सकता है? जब मनुष्य की इच्छाऐं निरंतर जारी हैं तो यह मानना पड़ेगा कि यह इच्छाऐं वास्तवकि हैं, और जब यह वास्तविक हैं तो अवश्य ही इनकी पूर्ति का साधन भी सृष्टि में होना चाहिए।

जब कोई व्यक्ति यात्रा करता है, तो इस यात्रा के दो पड़ाव होते हैं– एक जब आप यात्रा की अवस्था में हैं, दूसरा वह जब आप अपनी मंजिल पर पहुंच जाते हैं।

सफल यात्रा के लिए दोनों परिस्थितियों के अन्तर को समझना अनिवार्य है। जो यात्री इस अन्तर को नहीं समझेगा, वह मानसिक तनाव में पड़ जाएगा और अनावश्यक विपत्ति में पड़ कर अपनी अक़्ल (विवेक) खो देगा।

बुद्धिमान यात्री वह है जो यात्रा को यात्रा समझे, यात्रा को मंज़िल की हैसियत न दे। यह एक सामान्य बात है कि वह सुविधाएँ जो मंज़िल पर मिलती हैं, वह यात्रा के मध्य में नहीं मिल सकतीं। परन्तु हर यात्री इसको गवारा करता है, क्योंकि उसको विश्वास होता है कि यह यात्रा अस्थाई है। अतंतः उसकी यात्रा समाप्त हो जाएगी और मंज़िल पर पहुँच कर उसकी सारी इच्छाऐं पूर्ण हो जाएंगी।

हमारा वर्तमान जीवन बहुत सीमित समय के लिए है। समय का सीमित होना स्वंय इस बात का प्रमाण है कि यह यात्रा की अवस्था है। इस लिए यह सम्भव नहीं कि वर्तमान सीमित जीवन काल में हमें वह तमाम साधन उपलब्ध हों जिनको हम पाना चाहते हैं। वह साधन अवश्य हमको मिलेंगे, परन्तु मंज़िल पर पहुंच कर, यात्रा के बीच में हमें वह कभी मिलने वाला नहीं है।

हमारा जीवन काल दो भागों में बंटा हुआ है– मृत्यु से पूर्व का जीवन काल, एंव मृत्यु के बाद का जीवन काल। मृत्यु से पहले का समय यात्रा का समय है, और मृत्यु के बाद का समय मंज़िल पर पहुँचने का

समय। यही वह वास्तविक सत्य है जिससे प्रत्येक मनुष्य को अवगत कराना आवश्यक है, क्योंकि यही वास्तविकता मनुष्य को उसके जीवन के उद्देश्य से परिचित कराती है तथा उसके जीवन को अर्थ देकर संतुष्टि प्रदान करती है।

जीवन की यह व्याख्या इस प्रश्न से जुड़ी हुई है कि क्या मृत्यु के बाद मनुष्य दोबारा जीवित होता है? क्या मृत्यु के बाद भी ऐसा ही जीवन है जिसका अनुभव हम मृत्यु से पहले कर चुके हैं। इस प्रश्न का उत्तर हां है और इसको हम ठीक उसी वैज्ञानिक ढ़ंग से जान सकते हैं जैसे कि हम दूसरी वास्तविकता को जानते हैं।

तथ्यों को समझने का वैज्ञानिक ढ़ंग यह नहीं है कि जिस तथ्य को जानना हो, वह अपनी सम्पूर्ण अवस्था में वैज्ञानिक के सामने आ जाए। अगर यह शर्त हो तो सारे वैज्ञानिक तथ्य अज्ञात रह जाऐं और विज्ञान की उन्नति रूक जाए। तथ्यों के सम्बन्ध से, मनुष्य सदैव के लिए अंधकार में पड़ा रह जाए, क्योंकि कोई भी वास्तविकता इस तरह ज्ञात नहीं होती कि वह पहाड़ की तरह प्रत्यक्ष रूप में सामने आ जाए।

वास्तव में होता यह है कि वैज्ञानिक को अपनी खोज के बीच कई संकेत (clue) मिलते हैं जिन पर सोच–विचार करके वह एक ऐसी वास्तविकता तक पहुँच जाता है जो उससे पहले उसे ज्ञात न थी। दूसरे शब्दों में, इस संसार में संकेत (clue) द्वारा ही सारे तथ्यों तक पहुँचा जाता है।

उदाहरण के तौर पर विज्ञान में वास्तविकता के तौर पर यह मान लिया गया है कि 15 बिलियन वर्ष पूर्व Big Bang (वह विस्फोट जिस के बारे में वैज्ञानिकों का मानना है कि उसके द्वारा समस्त ब्रह्मांड की उत्पत्ति हुई) की घटना घटी। इसी प्रकार वैज्ञानिकों ने यह मान लिया कि यह एक फैलता हुआ ब्रह्मांड है।

इस प्रकार के तथ्य आज निर्विवाद यथार्थ बन चुके हैं। यह वास्तविकताऐं इस आधर पर नहीं बनीं कि मनुष्य ने उन्हें देख लिया, बल्कि एक संकेत (clue) मिलने पर मनुष्य ने उस पर विचार किया और इस चिंतन ने उसे एक बड़ी वास्तविकता तक पहुँचा दिया। यह बड़ी वास्तविकता यद्यपि दिखाई नहीं दे रही थी, फिर भी उसके अस्तित्व को एक सत्य घटना

के तौर पर मान लिया गया। यद्यपि अभी तक इस संदर्भ में इन संकेतों के सिवा मनुष्य के पर्यवेक्षण में कुछ नहीं आया है।

यही मामला मृत्यु के बाद वाले जीवन (या पूर्वक. ालिक जीवन) काल का है। पूर्वकालिक जीवन के विषय में भी निश्चित संकेत (clue) मौजूद हैं। इन संकेतों पर गम्भीरता के साथ विचार किया जाए तो वह हमें इस विश्वास तक पहुंचाते हैं कि मृत्यु के बाद भी जीवन है। मृत्यु के बाद भी इसी प्रकार एक और जीवन काल है जो अवश्य हर एक के सामने आएगा।

वह संकेत क्या है? उदाहरण के तौर पर, मनुष्य के शरीर में असंख्य कोशिकाऐं (cells) हैं। यह कोशिकाऐं हर समय टूटती रहती हैं। दूसरी ओर हमारी पाचन क्रिया (digestive system) हमारे भोजन को कोशिकाओं का रूप देती जाती है। इस प्रकार हमारी पाचन क्रिया मानो कोशिका बनाने की एक फैक्ट्री है। प्रक्रिया के इस नियम द्वारा लगभग दस वर्ष में हमारा पूरा शरीर बदल जाता है और नई कोशिकाओं के साथ एक संपूर्ण नया शरीर वुजूद में आ जाता है।

इस प्रकार हमारे शरीर पर बार–बार ''मृत्यु'' आती है लेकिन इसके बावजूद हम देखते हैं कि मनुष्य की चेतना तब भी जीवित रहती है। यह एक ज्ञात वास्तविकता है कि यह चेतन अस्तित्व ही मनुष्य का असल अस्तित्व है। यह अस्तित्व शारीरिक मृत्यु के बाद भी निरंतर बाक़ी रहता है। यह एक संकेत है जो बताता है कि मनुष्य मूल रूप से एक शाश्वत प्राणी है। उसके शाश्वत अस्तित्व का थोड़ा भाग मृत्यु के पहले वाले दौर में रखा गया है और उसका शेष (संपूर्ण) भाग मृत्यु के बाद वाले दौर में।

इसी प्रकार इस विषय में एक संकेत यह है कि मनुष्य में अपवाद तौर पर न्याय की कल्पना पाई जाती है। मनुष्य अपनी प्राकृतिक चेतना के कारण यह चाहता है कि संसार में न्याय स्थापित हो, जैसे कि सत कर्मियों को उनके कर्मों का अच्छा फल मिले और दुष्ट कर्मियों को उनके बुरे कार्य के लिए दंडित किया जाए। इस संकेत को समाने रखकर विचार किया जाए तो मनुष्य का विवेक (दिमाग) इस तर्क तक पहुँचता है कि वर्तमान जीवन काल चूंकि अपनी

समय अवधि के हिसाब से प्रयाप्त नहीं है, इसलिए बाद के जीवन काल में ही न्याय की इस मांग की पूर्ति होनी चाहिए और मनुष्य को उसके कर्मों के अनुसार दण्ड या पुरस्कार दिया जाना चाहिए।

इसी तरह इस विषय में एक संकेत यह है कि मनुष्य आजीवन से ही दोषरहित–संसार (perfect world) चाहता है। परन्तु वर्तमान संसार की सीमाबद्ध ता के कारण यहाँ पर उसका वांछित संसार नहीं बन पाता। इस संकेत पर विचार करते हुए मनुष्य इस खोज तक पहुँचता है कि जो दोषरहित–संसार मृत्यु से पहले की सीमित परिस्थितियों के कारण प्राप्त न हो सका, वह मनुष्य को बाद वाले अंततः काल में अपनी पूर्ण अवस्था में प्राप्त हो जाएगा।

इसी प्रकार एक संकेत यह भी है कि मनुष्य अपवाद के तौर पर एक ऐसी रचना है जो कल (tomorrow) की कल्पना रखता है। किसी भी अन्य जीव–जन्तुओं में कल की कल्पना नहीं पाई जाती। इस संकेत को लेकर विचार करने पर यह वास्तविकता सामने आती है की वर्तमान की सीमित अवस्था के कारण मनुष्य

अपने जिस वांछित संसार को न पा सका, उसको वह मृत्यु के बाद वाले अतंकालिक जीवन में पा लेगा। यह वह संसार होगा जहां मनुष्य अपने लिए पूर्ण रूप से फुलफिलमेंट का अनुभव कर सकेगा।

मृत्यु के बाद सर्वांगपूर्ण संसार की रचना एक निश्चित घटना है। परन्तु भविष्य के इस सर्वांगपूर्ण संसार में हर एक को अपने आप स्थान नहीं मिल जाएगा बल्कि केवल वह स्त्री अथवा पुरूष उस विशेष संसार में प्रवेश पाऐंगे, जो मृत्यु से पहले के इस संसार में अपना अधिकार सिद्ध कर सकें। यह प्रकृति का नियम है। कोई इनाम किसी को उसकी योग्यता के अनुसार मिलता है। अनाधिकृत किसी के भाग्य में कभी कोई बड़ा पुरस्कार नहीं होता।

प्रश्न यह है कि किसी व्यक्ति के लिए उस विशेष संसार में प्रवेश पाने का निर्धारित फार्मूला क्या है? वह निर्धारित फार्मूला है– अपने मन का शुद्धीकरण (purification of soul)।

जो व्यक्ति भविष्य के इस विषेश संसार में अपना स्थान चाहता है, उसको वर्तमान संसार में यह प्रमाण

देना होगा कि उसने अपनी गहरी समझ से प्रत्यक्ष संसार में अप्रत्यक्ष संसार को जाना। वह स्वंय को संभ्रांति (confusion) के जंगल से निकालकर सत्य को खोज सका। उसने नकारात्मक परिस्थितियों में स्वंय को सकारात्मक आचरण पर दृढ़ रखा। उसने स्वंय को पशु स्तर से उठाकर उच्च मानवता के स्तर पर पहुँचाया। उसने स्वंय को अस्वीकारिता, विश्वासघात, अहंकार, स्वार्थ, एवं खुदपसन्दी, जैसे पस्त गुणों से बचाया और पूरे चित्त और मन से स्वर्ग (जन्नत) का इच्छुक बना। संक्षिप्त में, ऐसा व्यक्ति जिसने ख़ुदा के बताए हुए मार्ग को पूरी तरह ग्रहण कर लिया।

ऐसे विशिष्ट गुणों वाले व्यक्तियों का चयन भविष्य के इस प्रतिष्ठित संसार के लिये किया जाएगा। जो लोग इस कसौटी पर खरे न उतरें, उनको रद्द कर के विश्व के कूड़ेदान में डाल दिया जाएगा, जहाँ वह सदैव दुख–संताप का जीवन व्यतीत करेंगे। वह कभी उस अपमान और व्यथा से मुक्ति न पा सकेंगे।

स्वर्ग और इंसान

यह 1998 की बात है, जब डा. महेश चन्द्र शर्मा ने मुझे दिल्ली के एक वरिष्ठ स्कॉलर (scholar) से मिलाया। यह प्रोफेसर नौनिहाल सिंह (जन्म 1923) थे, जो अमेरिका से रिटायर होकर लौटे थे और आने के बाद यहाँ उनको राज्य सभा का सदस्य (1992–1998) बना दिया गया था। उनका घर एक पुस्तकालय प्रतीत होता था। उसमें हर तरफ लिखने, पढ़ने का माहौल था। वह पूरे अर्थों में एक स्कॉलर दिखाई देते थे।

भेंट के समय उन्होंने बताया कि उन्होंने पॉलिटिकल साईन्स (political science) में एम.ए. (M.A.) किया था। उसके बाद उन्हों ने अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध (international relationship) के विषय पर पी.एच.डी. (Ph.D) किया। उस ज़माने में अमेरीका के एक विश्वविद्यालय को अपने लिए इस विषय पर एक प्रोफेसर की आवश्यकता थी। उसका विज्ञापन देखकर प्रोफेसर सिंह ने उसके लिए अपना आवेदन–पत्र भेज दिया। शीघ्र ही उनको विश्वविद्यालय की ओर से एक

पत्र मिला जिसमें उनको इंटरव्यू (interview) के लिये अमेरीका बुलाया गया था।

वह अमेरीका पहुँचे तो हवाई–अड्डे पर एक श्रीमान उनसे मिले। उन्होंने कहा कि मैं विश्वविद्यालय की ओर से भेजा गया हूँ, ताकि यहां मैं आपको गाईड करूँ। इसके बाद उस आदमी ने प्रोफेसर सिंह को अपनी गाड़ी में बिठाया और उनको लेकर विश्वविद्यालय पहुँचा। वहाँ के गेस्ट हाउस में उनको ठहराया गया।

इसके बाद वह आदमी प्रतिदिन प्रोफेसर सिंह के पास आता और उनको लेकर सुबह से शाम तक विश्वविद्यालय के विशाल कैम्पस में घुमाता रहता। इस प्रकार वह आदमी प्रोफेसर सिंह को विश्वविद्यालय के प्रत्येक विभाग (department) में ले गया और विश्वविद्यालय की प्रत्येक गतिविधि में उनको सम्मिलित किया। उदाहरणतः पुस्तकालय, भोजनालय, क्लास रूम, टीचर्स क्लब, स्टूडेंट मीटिंग, कार्यालय, इत्यादि।

इस प्रकार एक सप्ताह गुज़र गया। प्रोफेसर सिंह को चिन्ता हुई तो उन्होंने अपने विभाग के चेयरमैन से कहा कि मैं एक सप्ताह से यहाँ हूँ। यहाँ मुझे

इन्टरव्यू के लिए बुलाया गया था, परन्तु अब तक मेरा इंटरव्यू नहीं हुआ। चेयरमैन ने कहा कि आपका इन्टरव्यू हो चुका है। हमने आपकी नियुक्ति कर ली है, और आप कल से हमारे यहाँ सेवा आरम्भ (join) कर दें। उसके बाद चेयरमैन ने बताया कि एयरपोर्ट पर हमारा जो आदमी आपको मिला था, वो यहां का वरिष्ठ प्रोफेसर था और वही आपका इंटरव्यूवर भी था।

चेयरमैन ने कहा कि आपके भेजे हुऐ काग़ज़ात को देखने के बाद हमने आपकी शैक्षिक योग्यता जान ली थी। अब हमको यह जानना था कि आप हमारे विश्वविद्यालय कलचर (university culture) पर पूरे उतरते हैं या नहीं। यह इन्टरव्यूवर यही कार्य कर रहा था, वह आपको विश्वविद्यालय के हर भाग में ले गया, उसने यहाँ की समस्त गतिविधियों से आपका परिचय कराया।

उसने छात्र और शिक्षक दोनों के साथ आपके व्यवहार को देखा। इस बीच वह आपकी हर बात का बारीकी से अध्ययन करता रहा। इंटरव्यूवर की रिपोर्ट आपके बारे में पूरी तरह सकारात्मक है। इस प्रकार आपका रिकॉर्ड देखने के पश्चात हमने आपका

चयन कर लिया है। आप कल से यहाँ अपना कार्य आरम्भ कर दें।

यह उदाहरण स्वर्ग (जन्नत) और मनुष्य की एक वास्तविक व्याख्या प्रस्तुत करता है। ईश्वर ने एक विस्तृत संसार बनाया– स्वर्ग का संसार (जन्नत) जो कि पूरे अर्थों में एक सम्पूर्ण संसार था। यहां प्रत्येक वस्तु उच्चस्तरीय थी। ईश्वर ने चाहा कि इस सम्पूर्ण संसार में वह ऐसे लोगों को बसाए जो अपने उच्च आचरण से स्वंय को उसके योग्य सिद्ध करें और इस श्रेष्ठतम संसार में उच्चस्तरीय इंसान के तौर पर रह सकें।

इसके उपरांत, ईश्वर ने वर्तमान संसार को जन्नत के परिचय के तौर पर बनाया और यहाँ वह समस्त साधन उपलब्ध कराए जो स्वर्ग लोक में उपलब्ध हैं। इसमें विभिन्नता यह है कि जन्नती संसार एक परिपूर्ण संसार है और वर्तमान संसार अपूर्ण संसार। जन्नती संसार अनश्वर और वर्तमान संसार नश्वर है। जन्नती संसार हर प्रकार के भय और शोक से रहित है, जबकि वर्तमान संसार भय और शोक से भरा हुआ है। जन्नती संसार पुरस्कार (reward) का संसार

है और वर्तमान संसार परीक्षा (test) का संसार है।

ईश्वर ने इस योजना के अनुसार, मनुष्य को पैदा करके उसको इस संसार में बसाया और यहाँ उसने मनुष्य को पूर्ण स्वतंत्रता दे दी। उसने मनुष्य को यह अवसर दिया कि वह यहाँ बाधा रहित रहे और मिली हुई स्वतंत्रता का ग़लत या सही प्रयोग करे। पृथ्वी पर जन्म लेने वाले प्रत्येक व्यक्ति के साथ दो अदृश्य फ़रिश्ते (angels) सदैव रहते हैं। वह व्यक्ति के प्रत्येक वचन और कार्य का सम्पूर्ण रिकॉर्ड तैयार करते हैं।, इसी रिकॉर्ड के आधार पर अगली दुनिया में जन्नत (स्वर्ग) या जहन्नम (नर्क) का निर्णय होगा।

जन्नती दुनिया में सम्पूर्ण स्वतंत्रता होगी, परन्तु उसके योग्य व्यक्ति इतना अधिक संवेदनशील और सचेत होगा कि वह किसी भी स्थिति में अपनी स्वतंत्रता का अनुचित उपयोग नहीं करेगा। वह पूर्ण रूप से स्वतंत्र होते हुए भी पूरी तरह अनुशासित रहेगा। यही वह इंसान हैं जिसके चयन के लिए वर्तमान संसार बनाया गया है। वर्तमान संसार में भी वह सारी परिस्थितियां पाई जाती हैं जो जन्नती दुनिया में मौजूद होंगी। इस दुनिया में यह देखा जा रहा है कि वह

कौन सा व्यक्ति है जिसने हर प्रकार की परिस्थितियों से गुज़रते हुए विशिष्ट जन्नती व्यक्तित्व का प्रमाण दिया। ऐसे व्यक्ति का चयन करके उसे जन्नती दुनिया में शाश्वत तौर पर बसा दिया जाएगा।

प्रत्येक व्यक्ति के साथ ईश्वर के अदृश्य फ़रिश्ते उसके प्रत्येक क्षण का रिकॉर्ड तैयार कर रहे हैं। मनुष्य यहाँ परीक्षा अवस्था में है, इसी परीक्षा के परिणाम के आधार पर प्रत्येक व्यक्ति के भविष्य का निर्णय होने वाला है। वह परीक्षा यह है कि मनुष्य हर अवस्था में ईश्वर की बड़ाई को स्वीकार करे। उदाहरण के तौर पर जब मनुष्य के विवेक ने उसको रोका तो उसने विवेक की आवाज़ को माना, या उसने उसको ठुकरा दिया। जब उसके सामने तर्क के साथ कोई सत्य आया तो वह उसके आगे झुक गया, या उसने उसके विरूद्ध अहंकार दिखाया। जब अहं और सत्य में टकराव हुआ तो वह अपने अंह के पीछे चला, या उसने सत्य को स्वीकार किया।

लोगों से मामला करते हुए वह न्याय पर टिका रहा, या वह अपने निजी लाभ के लिए अन्याय करने लगा। वह केवल लोगों के बीच अच्छा बना रहा,

या अपने निजी जीवन में भी वह सच्चाई पर क़ायम रहा। उसने सत्य को उच्च प्राथमिकता दी, या सत्य के अतिरिक्त किसी और विषय को उसने अपनी दिलचस्पी का केन्द्र बनाया। इसी प्रकार जब उसको सत्ता मिली तो उसमें बिगाड़ आ गया, या सत्ता के उपरान्त भी वह न्याय पर स्थिर रहा। जब उसको ध न–सम्पत्ति प्राप्त हुई या उसको निर्धनता का अनुभव हुआ तो दोनों परिस्थितियों में उसने संतुलन बनाए रखा, या वह संतुलन के मार्ग से हट गया।

समाजी जीवन में जब उसको आगे की सीट मिली, उस समय वह कैसा था और जब उसको पीछे की सीट पर बैठना पड़ा तब उसका व्यवहार कैसा था। उसने अपने जज़बात और अपनी इच्छा को नियम का पाबंद बनाया, या नियम से हट कर वह अपनी इच्छाओं के पीछे चल पड़ा। इसी रिकॉर्ड के आधार पर प्रत्येक स्त्री और पुरूष के शाश्वत भविष्य (eternal future) का निर्णय होने वाला है।

वर्तमान पृथ्वी की रचना एक सीमित समय के लिए की गई है। इस समय के समाप्त होने पर यहाँ जन्म

लेने वाले समस्त प्राणी, ईश्वर के सामने उपस्थित किए जाऐंगे। ईश्वर, फरिश्तों (दिव्यदूत) द्वारा तैयार किए गए रिकॉर्ड के अनुसार, हर एक के भविष्य का निर्णय करेगा। जिस स्त्री या पुरूष का रिकॉर्ड बताएगा कि वह पृथ्वी पर जन्नती चरित्र के साथ रहा, उसने अपनी स्वतंत्रता का ईश्वर द्वारा बनाए गए नियम के अनुसार पालन किया और उसने यह सिद्ध किया कि वह जन्नती संसार में बसाए जाने योग्य है। ऐसे लोगों को जन्नत के बाग़ों में रहने के लिए चुन लिया जाएगा। वह समस्त लोग जो जन्नती आचरण का प्रमाण न दे सके, उनको रद्द करके कायनाती कूड़ेदान (जहन्नम) में डाल दिया जाएगा, ताकि वह वहाँ सदैव हसरत और मायूसी का जीवन व्यतीत करते रहें और कभी उससे छुटकारा न पा सकें।

(Translated by Dr. Muslema Siddiqui)

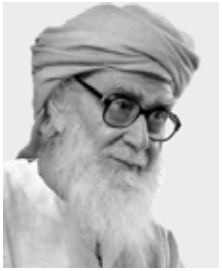

मौलाना वहीदुद्दीन खाँ एक आध्यात्मिक विद्वान हैं। उन्होंने शान्ति को अपने जीवन के मिशन के रूप में अपनाया है। आप अपने सन्तुलित विचारों के लिए विख्यात हैं। आप शान्ति और आध्यामिकता के विकास के लिए कई दशक से सक्रिय हैं। विश्व शान्ति और विश्व एकता विकसित करना उनका महत्वपूर्ण उद्देश्य है। सन् 2000 ई० में आपने अन्तर्राष्ट्रीय सेन्टर फ़ॉर पीस एण्ड स्प्रीचुअलिटी (CPS) की स्थापना की। यह अव्यापारिक और अराजनैतिक संगठन है जो चिन्तन पर आधारित अध्यात्म के माध्यम से शान्ति की संस्कृति विकसित करना चाहता है। इस उद्देश्य के लिए हमारा संगठन अन्तर्धार्मिक संवाद आयोजित करता है। सेण्टर फ़ॉर पीस एण्ड स्प्रीचुअलिटी, शान्ति के सन्देश का विश्व स्तर पर प्रचार करने के लिये उपलब्ध संचार माध्यमों जैसे–व्याख्यान, सम्मेलन, व्यक्तिगत वार्ता, समाचार पत्रों में लेखों का प्रकाशन, दूरदर्शन कार्यक्रम और इन्टरनेट के माध्यम से, आध्यात्मिक सिद्धान्तों में कार्यकर्त्ताओं के प्रशिक्षण का उपयोग करता है। यदि आप कोई प्रश्न पूछना चाहते हैं तो बिना संकोच इस नम्बर पर फ़ोन करें: 91-9810558483.

Watch Maulana Wahiduddin Khan on

ETV Urdu

Rehnuma-e-Hayat

Monday to Thursday 5:00 am

USTREAM.tv

Sunday 10.30 am

Visit www.cpsglobal.org for the ustreem link

Bringing you a splendid range of Islamic books and children's products

We welcome you to our bookstore, it is open all seven days from 10 am to 8 pm.

Goodword Books
1, Nizamuddin West Market, New Delhi 110013
Tel. 011-4182 7083, 2435 6666
Fax: 011-4565 1771
e-mail: info@goodwordbooks.com
info@cpsglobal.org

इन्सान एक अनंत जीव है। इन्सान का जीवन दो दौर में बटा हुआ है– मौत से पहले का दौर, और मौत के बाद का दौर। मौत से पहले का दौर तैयारी का दौर है, और मौत के बाद का दौर तैयारी के अनुसार, उसका परिणाम पाने का दौर। हर औरत और मर्द को चाहिए कि वह सबसे पहले जीवन के इस रहस्य को समझे, क्यों कि इसी के ऊपर उसका अनंत भविष्य निर्भर है।

CPS International
centre for peace & spirituality
www.cpsglobal.org

Goodword
www.goodwordbooks.com